पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़

(छ,ग, भाासन के अधिनियम क्रमांक 26 सन् 2004 द्वारा स्थापित)
कोनी – बिरकोना मार्ग, बिलासपुर (छ,ग,) 495009 दूरभाष क्रमांक : (07752) 240715
www.pssou.ac.in E-mail-registar@pssou.ac.in

पाठ्यक्रम

बी.ए.

अर्थशास्त्र

VERIFIED
REGISTRAR
Pt. Sunderlal Sharma (Open)
University Chhattisgarh
BILASPUR (C.G.)

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

बी.ए. अर्थशास्त्र
प्रथम वर्ष
व्यष्टि अर्थशास्त्र (प्रथम प्रश्नपत्र)

खण्ड - I

अध्याय – 1 अर्थशास्त्रा : प्रकृति विषय क्षेत्र
अर्थशास्त्र का उद्‌भव एवं ऐतिहासिक परिचय, अर्थशास्त्र की परिभाषा सम्बन्धी समस्याएं, अर्थशास्त्र की परिभाषाएं, अर्थशास्त्र की कुछ अन्य परिभाषाएं, अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री या क्षेत्र, अर्थशास्त्र का स्वभाव, अर्थशास्त्र का महत्व

अध्याय – 2 अर्थशास्त्रा में विधियाँ, निगमन प्रणाली अथवा अनुमान प्रणाली, प्रणाली के गुण, प्रणाली के दोष, अनुभव प्रणाली या आगमन प्रणाली, गुण, दोष, दोनों प्रणालियों के सम्बन्ध में विवाद, निगमन तथा आगमन प्रणालियों की पूरकता

अध्याय – 3 उपयोगिता विश्लेषण (गणवाचक व क्रमवाचक) उदासीन वक्र एवं उपभोक्ता का साम्य (हिक्स एवं स्लटस्की), उपयोगिता, उपयोगिता की माप सम्भव है, उपयोगिता के प्रकार, कुल उपयोगिता, सीमान्त उपयोगिता, एवं कुल उपयोगिता में सम्भन्ध, अर्थशास्त्रा के सिद्धान्त में सीमान्त की अवधरणा, सीमान्त उपयोगिता ह्यस नियम, सम–सीमान्त उपयोगिता नियम, उदसीनता वक्र, प्रतिस्थापन की सीमान्त दर अथवा सीमान्त प्रतिस्थापन दर, घटती हुई प्रति स्थापन दर का सिद्धान्त, तटस्थता वक्र तथा उपभोक्ता का संतुलन, आय प्रभाव, मूल्य प्रभाव, प्रतिस्थापन प्रभाव, प्रतिस्थापन प्रभावः स्लट्‌स्की का दृष्टिकोण, प्रतिस्थापन प्रभावः हिक्स तथा स्लट्‌स्की के दृष्टिकोणों की तुलना, कीमत प्रभाव के विभाजन की रीतियाँ

अध्याय – 4 माँग व माँग का नियम, माँग का आशय एवं परिभाषाएँ, माँग के भेद, माँग के अन्य प्रकार, माँग को प्रभावित करने वाले कारक, माँग का नियम, माँग में विस्तार एवं संवुफचन, माँग में वृद्धि या कमी, माँग में कमी तथा माँग के संवुफचन में भेद, माँग की वृद्धि तथा माँग के विस्तार में भेद

अध्याय – 5 माँग की लोच, माँग की लोच, परिभाषा, माँग की लोच के प्रकार या श्रेणियाँ, माँग की लोच को मापने की रीतियाँ, माँग की लोच पर प्रभाव डालने वाले तत्व, माँग की लोच का महत्व, विज्ञापन तथा माँग की लोच

अध्याय – 6 उपभोक्ता की बचत एवं एंजल वक्र, उपभोक्ता की बचत, मुद्र की सीमान्त उपयोगिता, प्रभावित करने वाले तत्व, माप और उसकी कठिनाइयों, आलोचनाएँ, तटस्थता वक्रों द्वारा निरूपण, महत्व

खण्ड - II

अध्याय – 7 उत्पादन फलन, अल्पकालिक एवं दीर्घकालिक उत्पादन फलन, रेखीय समरूप फलन, कॉब–डगलस का उत्पादन फलन, परिपर्तनशील अनुपात का नियम, उत्पत्ति शस नियम की क्रियाशीलता का स्थगण

अध्याय – 8 आर्थिक क्षेत्रा, साध्नों का अनुकूलतम संयोग, विस्तार पथ तथा पैमाने के प्रतिपफल, विस्तार पथ, सम–उत्पादन वक्र, द्वजू रेखायें अथवा उत्पादन के आर्थिक क्षेत्रा की सीमाएँ, पैमाने के प्रतिपफल आशय, पैमाने के प्रतिपफल के निर्धरक घटक

VERIFIED

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU CG Bilaspur

अध्याय – 9 पैमाने की बचतें, बड़े पैमाने का उत्पादन, बड़े पैमाने के दोष, बड़े पैमान के उत्पादन की वाँछनीयताएँ, छोटे पैमाने का उत्पादन, छोटे पैमाने के उत्पादन के दोष, आर्थिक विकास में छोटे पैमाने के उद्योगों की भूमिका

अध्याय – 10 लागत, उत्पादन लागत के प्रकार, दीर्धकालीन लागतें, दीर्धकालीन औसत लागत वक्र के लक्षण, दीर्धकालिक सीमान्त लागत तथा दीर्धकालिक औसत लागत में सम्बन्ध

अध्याय – 11 फर्म का साम्य, साम्य का वर्गीकरण

अध्याय – 12 बाजार संरचना, बाजार आशय एवं परिभाषाएँ, बाजार की विशेषताएँ, बाजार का वर्गीकरण, बाजार के विस्तार के कारण, बाजार के रूप, पूर्ण या विशु प्रतियोगिता का औचित्य, विशु एकाधिकार, अपूर्ण प्रतियोगिता, एकाधिकारी प्रतियोगिता, अल्पाधिकारी, द्वयाधिकार, पूर्ण प्रतियोगिता एवं अपूर्ण प्रतियोगिता में अन्तर

खण्ड - III

अध्याय – 13 पूर्ण प्रतियोगिता, मूल्य निर्धारण का सामान्य सिद्धान्त, प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों का विचार, आधुनिक अर्थशास्त्रियों का विचार, मूल्य निर्धारण का विरोधाभास

अध्याय – 14 एकाधिकार एवं कीमत विभेद, एकाधिकार – आशय व परिभाषा, वर्गीकरण, एकाधिकारी – शक्ति, एकाधिकारी – शक्ति के प्रकार, एकाधिकार के कारण, मूल्य निर्धारण के सम्बन्ध में मान्यताएँ, एकाधिकारी का उद्देश्य, क्या एकाधिकारी 'कीमत' तथा 'उत्पादन' दोनों को एक साथ निश्चित कर सकते हैं?, एकाधिकार के अन्तर्गत मूल्य निर्धारण, अल्पकाल में एकाधिकार साम्य, दीर्घकाल में एकाधिकार का साम्य, क्या एकाधिकार मूल्य तथा स्पर्धात्मक कीमत से ऊँची होती है?, प्रतियोगिता के भय में एकाधिकार मूल्य, एकाधिकार शक्ति को सीमित करने वाले कारक, एकाधिकार का नियंत्रण, मूल्य विभेद

अध्याय – 15 एकाधिकृत प्रतियोगिता, एकाधिकृत प्रतियोगिता की दशाएँ व लक्षण, अपूर्ण प्रतियोगिता और एकाधिकृत प्रतियोगिता को समानार्थी मानना, एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता में मूल्य निर्धारण, मूल्य निर्धारण की विधियाँ, अपूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत आगम एंव लागत वक्र, समूह साम्य, एकाधिकार एंव एकाधिकृत प्रतियोगिता में अन्तर

अध्याय – 16 द्वियाधिकार एवं अल्पाधिकार, आशय, अल्पाध्किार के अन्तर्गत मूल्य निर्धरण, मूल्य नेतृत्व के अन्तर्गत मूल्य निर्धरण

अध्याय – 17 कराधन तथा नियंत्रित एवं प्रशासित कीमत, करारोपण, प्रभाव, कीमत नियंत्राण

अध्याय – 18 वितरण का सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त, परिभाषाएँ, वितरण के एक प्रथम सि(ान्त की आवश्यकता, सीमान्त उत्पादकतों सिद्धान्त, मान्यताएँ, आधुनिक सिद्धान्त

खण्ड - IV

अध्याय – 19 मजदूरी, मजदूरी का आशय, मजदूरी निर्धारण के सिद्धान्त

अध्याय – 20 लगान, लगान : अर्थ एंव परिभाषा, लगान के स्वरूप, आर्थिक लगान तथा ठेका लगान, लगान के सिद्धान्त, रिकार्डो के लगान सिद्धान्त तथा आधुनिक सिद्धान्त लगान में अन्तर, लगान तथा कीमत, आभास लगान, आभास लगान

अध्याय – 21 ब्याज, ब्याजः अर्थ एवं परिभाषा, कुल ब्याज के संघटक, ब्याज के विभिन्न सिद्धान्त, क्या ब्याज की दर शून्य हो सकती है।

VERIFIED

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

अध्याय – 22 लाभ, लाभ : अर्ध व परिभाषाएँ, कुल लाभ व शुद्ध लाभ, कुल लाभ के संघटक, लाभ के विभिन्न सिद्धान्त

अध्याय – 23 कल्याण अर्थशास्त्र, कल्याण अर्थशास्त्र का अर्थ, कल्याण अर्थशास्त्रा एवं सरकार की भूमिका, व्यक्तिगत कल्याण एवं सामाजिक कल्याण, अन्तः व्यक्ति उपयोगिताओं की तुलना एवं कल्याण अर्थशास्त्रा, कल्याण अर्थशास्त्रा की मान्यताएं व शर्तें, व्यक्तिगत कल्याण एवं सार्वजनिक निर्णय प्रक्रिया, कल्याण अर्थशास्त्रा की सीमाएं

अध्याय – 24 परेटो का कल्याण अर्थशास्त्र, संख्या सूचक व क्रम सूचक उपयोगिता, उपयोगिताओं की अन्तः व्यक्ति तुलना एवं सामाजिक आर्थिक कल्याण, विल्प्रेफडो परेटो एवं कल्याण अर्थशास्त्र, परेटो श्रेष्ठता, परेटो इष्टमता तथा सहमति सिद्धान्त, परेटो की इष्टम शर्तें, उत्पादन संभाव्यता वक्र एवं इष्टतम विनिमय स्थिति, इष्टतम विनिमय तथा उपयोगिता संभावना वक्र, परेटो इष्टतम शर्तें एवं पूर्ण प्रतियोगिता, क्या परेटो की इष्टतम शर्तें पूरी हो सकती हैं ?, द्वितीय श्रेष्ठ प्रमेय

अध्याय – 25 सामाजिक कल्याण फलन, नव–कल्याण अर्थशास्त्रा का अर्थ, पीगू के आदर्श उत्पादन की विलियम बॉमोल द्वारा विवेचना, परम्परागत कल्याण अर्थशास्त्रा की अव्यावहारिकता, वैयक्तिक कल्याण तथा सार्वजनिक निर्णय प्रक्रिया

अध्याय – 26 क्षतिपूर्ति सिद्धान्त, क्षतिपूर्ति का अर्थ एवं आवश्यकता, क्षतिपूर्ति मापदण्ड, क्षतिपूर्ति सिद्धान्तों की आलोचना, आय में समानता की समस्या तथा रॉल्स का 'न्याय का सिद्धान्त

VERIFIED

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

भारतीय अर्थव्यवस्था (द्वितीय प्रश्नपत्र)

खण्ड – I

अध्याय – 1 भारत में भू–प्रणाली, औद्योगिक विकास एवं बैंकिंग विकास
भूमि सुधर, उद्योगों की भूमिका, केन्द्रीय बैंक, मौद्रिक नीति, व्यापारिक बैंक

अध्याय – 2 स्वतन्त्रता के समय भारतीय अर्थव्यवस्था
18वीं शताब्दी के मध्य में भारतीय अर्थव्यवस्था, आर्थिक आधारित संरचनाएँ, सामाजिक अधः संरचनाएँ, स्वतंत्राता के समय भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति

अध्याय – 3 भारत में नियोजन व्यवहार
भारत में नियोजन, योजना आयेाग, बम्बई योजना, जन–योजना, गाँधीवादी योजना

अध्याय – 4 भारतीय अर्थव्यवस्था का ढाँचा
भारत–एक विकासशील अर्थव्यवस्था

अध्याय – 5 जनसंख्या की समस्या एवं जनसंख्या नीति
जनसंख्या वृद्धि के कारण, जनंसख्या वृद्धि को रोकने के, सुझाव, जनांकिकीय संक्रमण का सिद्धान्त, अल्प–विकसित देशों, जानांकिकीय विशेषताएँ, जनसंख्या वृद्धिः आर्थिक विकास में सहायक, जनसंख्या वृद्धिः आर्थिक विकास में बाधक, भारत में जनसंख्या वृद्धि, आर्थिक विकास और जनसंख्या, जनसंख्या नीति, परिवार नियोजन, जनांकिकीय प्रवृत्तियाँ

अध्याय – 6 आधारभूत ढाँचे का विकास
वर्गीकरण, आर्थिक आधारित संरचना, मानव संसाधन, विकास का अर्थ एवं महत्व, स्वास्थ्य एवं पोषण

खण्ड – II

अध्याय – 7 राष्ट्रीय आय
राष्ट्रीय आय का अर्थ, प्रति व्यक्ति आय का अर्थ, राष्ट्रीय आय का अनुमान, केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन, स्वतंन्त्रता के पश्चात राष्ट्रीय आय की गणना की विधियाँ, महत्व, भारत में राष्ट्रीय को मापने में कठिनाइयाँ, राष्ट्रीय आय में प्रवृत्तियाँ, राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय की वार्षिक वृद्धि दर, भारत की प्रति व्यक्ति आय तथा GDP की विकास दर की अन्य देशों से तुलना, विभिन्न देशेां के सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर, राष्ट्रीय आय का ढाँचा, राष्ट्रीय आय में विभिन्न क्षेत्रों के योगदान में तुलनात्मक परिवर्तन, भारत की राष्ट्रीय आय की मुख्य विशेषताएँ, कम राष्ट्रीय आय के कारण, भारत की राष्ट्रीय आय बढ़ने सुझाव

अध्याय – 8 भारत में नियोजन : उद्देश्य, रणनीति, सफलताएँ एवं असफलताएँ
भारत की पंचवर्षीय योजनाओं की समयावधि, भारत में नियोजन के उद्देश्य, नियोजन एक कठिन कार्य, विकास योजाओं की सफलताएँ एवं उपलब्धियाँ, विकास योजनाओं की विफलताएँ अथवा कमियाँ, योजनाओं की असफलताओं के कारण, योजनाओं को सफल बनाने के सुझाव, पंचवर्षीय योजनाएँ, योजनाओं की समीक्षा, नवीं योजना, दसवीं पंचवर्षीय योजना

अध्याय – 9 ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना (1 अप्रैल, 2007 से 31 मार्च 2012 तक)
दृष्टि तथा युक्ति, ग्यारहवीं योजना के प्रमुख लक्ष्य, समष्टि आर्थिक रूपरेखा, ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना की वित्तीय संरचना, ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना में विभिन्न क्षेत्रों का सार्वजनिक क्षेत्र परिव्यय, रोजगार परिप्रेक्ष्य, खण्डीय नीतियाँ

अध्याय – 10 चालू पंचवर्षीय योजना

VERIFIED
Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

उद्देश्य, निवेश एवं बचत आवश्यकताएँ, संसाधनों का बँटवारा, वित्त व्यवस्था, आधारिक संरचना निवेश, रणनीति, मूल्यांकन

अध्याय – 11 नये आर्थिक सुधारः उदारीकरण निजीकरण एवं वैश्वीकरण
1991 से पूर्व की आर्थिक नीति की विशेषताएँ, 1991 का आर्थिक चित्र, 1991 से आर्थिक सुधार, नई औद्योगिक नीति, उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण, नई आर्थिक नीति के लाभ, नई आर्थिक नीति की कमियाँ

खण्ड – III

अध्याय – 12 कृषि
विशेषताएँ, कृषि उत्पादकता की प्रकृत्तियाँ, निम्न कृषि उत्पादकता के कारण, सुझाव

अध्याय – 13 भूमि सुधार
भूमि सुधार की परिभाषा, उद्देश्य एवं आवश्यकताएँ, भारत में योजनावधि में सुधार, भारत में प्रमुख भूमि सुधार, भूमि सुधारों की समीक्षा, सुझाव, कृषि जोतों का विपणन, भारत में जोतों का उप–विभाजन एवं अपरखण्डन, भूमि सुधार, भारत में भूमि सुधारों की धीमी प्रगति के कारण, भूमि सीमा बन्दी, कृषि तकनीकी का चयन
प्रौद्योगिकी एवं जैव प्रौद्योगिकी का चयन

अध्याय – 14 नई कृषि रणनीतियाँ एवं हरित क्रान्ति
नई कृषि अक्ति के प्रमुख संघटक, हरित क्रान्ति, कृषि यन्त्रीकरण का अर्थ, एवरग्रीन रिवॉल्यूश्न, पीली क्रान्ति, भारत में खेत क्रान्ति ऑपरेशन फ्लड

अध्याय – 15 ग्रामीण साख
कृषि साख की आवश्यकता, कृषिवित्त नीति, कृषि द्धण नीति के प्रभाव, राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक, कृषि वित्त प्रणाली में कमजोरियाँ

अध्याय – 16 कृषि विपणन
आदर्श कृषि विपणन पद्धति, कृषि पदार्थो के विक्रय की वर्तमान व्यवस्था, विक्रय व्यवस्था के दोष या कठिनाइयाँ, कृषि विपणन व्यवस्था को सुधारने हेतु किए गए कार्य, सहकारी विपणन

अध्याय – 17 योजनाकाल में औद्योगिक विकास
भारत में औद्योगिक विकास, पंचवर्षीय योजना में औद्योगिक विकास, योजना काल में औद्योगिक विकास

अध्याय – 18 औद्योगिक एवं लाइसेन्सिंग नीतियाँ
औद्योगिक नीति के उद्देश्य, औद्योगिक नीति 1948, औद्योगिक नीति 1956, औद्योगिक नीति 1977, औद्योगिक लाइसेंस प्रणाली, औद्योगिक नीति की कमियाँ, फेरा

अध्याय – 19 लघु उद्योग
लघु क्षेत्र, लघु उद्योग का तर्काधार, लघु उद्योगों की प्रगति, लघु उद्योगों की समस्याएँ, लघु उद्योगों को प्रोत्साहन के उपाय, लघु एवं बड़े उद्योगों का सह–अस्तित्व, लघु उद्योगों के लिए नयी नीति, 1991, लघु पैमाने के उद्योगों के लिये नवीनतम प्रोत्साहन, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास अधिनियम, 2006 की प्रमुख विशेषताएँ

अध्याय – 20 सार्वजनिक उपक्रम
लोक उपक्रम की परिभाषा, आवश्यकता, औचित्य, लोक उपक्रम पर सामाजिक नियंत्रण, संगठन का स्वरूप, नियोजन काल में लोक उपक्रम, वर्तमान स्थिति, सार्वजनिक क्षेत्र की नीति के भावी दिशा–निर्देश, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में विनिवेश, लोक उपक्रमों की उपलब्धियाँ, नई सार्वजनिक क्षेत्र नीति, भूमिका एवं योगदान, सार्वजनिक उद्यमों की

VERIFIED

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

निष्पादनता, असफलताएँ, सार्वजनिक उद्यमों की निम्न निष्पादकता के कारण, सुझाव, निजी क्षेत्र, विनिवेश

खण्ड – IV

अध्याय – 21 विदेशी व्यापार : भूमिका, प्रवृत्तियाँ

विदेशी व्यापार का महत्व, स्वतंत्रता से पूर्व विदेशी व्यापार, योजनाकाल में विदेशी व्यापार, प्रमुख निर्यात, निर्यात वृद्धि के लिए सुझाव, निर्यात वृद्धि के लिए सरकारी प्रत्यन्न, विदेशी व्यापार की संरचना, विदेशी व्यापार की दशा, विदेशी व्यापार की संवृद्धि एवं संरचना

अध्याय – 22 भुगतान संतुलन

भुगतान संतुलन का अर्थ, व्यापार संतुलन, व्यापार संतुलन एवं व्यापार संतुलन में अंतर, संरचना एवं स्वरूप, भुगतान शेष में असंतुलन, कुल भुगतान शेष की प्रवृत्तियाँ, चालू खाते पर भुगतान शेष की प्रवृत्तियाँ, भुगतान संतुलन संकट, प्रतिकूल भुगतान शेष/प्रतिकूल व्यापार शेष के कारण, भुगतान शेष के असंतुलन को ठीक करने के उपाय

अध्याय – 23 विदेशी व्यापार नीति

निर्यात–आयात नीति, विदेशी व्यापार नीति 2004–2009, निर्यात–आयात नीति 2009–14, निर्यात–आयात नीति, 2009–14 के लिए वष्र 2013–14 का वार्षिक घोषणा पत्र

अध्याय – 24 निर्धनता

अर्थ, निर्धनता रेखा, निर्धनता रेखा का निर्धारण, निर्धनता की प्रवृत्तियाँ, निर्धनता के कारण, सरकार द्वारा निर्धानता दूर करने के उपाय, निर्धनता उन्मूलन कार्यक्रमों का मूल्यांकन, सुझाव

अध्याय – 25 असमानता एवं बेरोजगारी

आय और धन की असमनताएँ, भारत में रोजगार की संरचना (ढाँचा), भारत में बेरोजगारी समस्या की प्रवृति एवं आकार, भारत में बेरोजगारी की समस्या की प्रवृति, भारत में बेरोजगारी का आकार, शहरी बेरोजगारी, ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी दूर करने के लिए उठाए गए कदम, भारत में शिक्षित बेरोजगारी, भारत में ग्रामीण बेराजगारी के कारण, बेरोजगारी की समस्या निवारण के लिए सुझाव, प्रच्छन्न बेरोजगारी का आशय एवं प्रवृति, भारत में बचत समर्थता के संग्रहण से कठिनाइयाँ, भारत में बेरोजगारी की प्रकृति/स्वरूप व किस्में, बेरोजगारी के सम्बन्ध में सरकार की नीति और उपाय

अध्याय – 26 मूल्य वृद्धि

कीमतों को प्रभावित करने वाले माँग पक्ष की ओर के, घटक, मुद्रा स्फीति के परिणाम, सरकार की नीति

VERIFIED

Dr. Anita Singh
incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

बी. ए. द्वितीय वर्ष
समष्टि अर्थशास्त्र एवं सार्वजनिक वित्त

(प्रथम प्रश्न पत्र)

खण्ड – I

अध्याय – 1 : समष्टि अर्थशास्त्र : प्रकृति एवं क्षेत्र

क्षेत्र व महत्व, सीमाएँ, व्यष्टि अर्थशास्त्र तथा समष्टि अर्थशास्त्र के अन्तर, व्यष्टि से समष्टि की ओर संक्रमण

अध्याय – 2 : राष्ट्रीय आय की अवधरणाएँ एवं भाप

राष्ट्रीय आप का अर्थ, प्रति व्यक्ति आय का अर्थ, राष्टीप,आय का अनुमान, केन्दीय सांख्यिकीय संगठन, स्वतंत्राता के पश्चात राष्ट्रीय आय की गणना की विधियाँ, महत्व, भारत में राष्ट्रीय आय को मापने में कठिनाइयाँ राष्ट्रीय आप में प्रवृत्तियाँ, राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आप आय की वर्षिक वृद्वि दर, भारत की प्रतिव्यक्ति आप तथा GDP की विकास दर की अन्य देशों से तुलना, विभिन्न देशों के सकल घरेलू उत्पाद की वृद्वि दर, राष्ट्रीय, आय का ढाँचा, राष्ट्रीय आय में विभिन्न देशों के योगदान में तुलनात्मक परिवर्तन, भारत की राष्ट्रीय आय की मुख्य विरोषताएँ कम राष्ट्रीय आय के कारण, भारत की राष्ट्रीय आय बढ़ने सुझाव

अध्याय – 3 : सामाजिक लेखांकन

आशय, धत्क, प्रस्तुतीकरण, महत्व, कठिनाइयाँ

अध्याय – 4 : हरित लेखांकन

पर्यावरण का महत्व, प्रदूषण, प्रबन्धन,प्रदूषण एवं राष्ट्रीय,आय लेखे,हरित लेखांकन

अध्याय – 5 : रोजगार का प्रतिष्ठित सिद्धांत एवं 'से' का बाजार नियम

पूर्व रोजगार, प्रतिष्ठित अवधरणा, कीन्स एवं आधुनिक विचार'से' का बाजार नियमश्रम माँग व श्रम पूर्ति विश्लेषण

अध्याय – 6 : उत्पादन एवं कीन्स का रोजगार सिद्धांत

महत्व, आलोचना, कीन्स का अर्थशास्त्रा एवं विकासशील देश प्रभावी मांग,कीन्स एवं प्रतिष्ठित रोजगार सिद्वात की तुलना

अध्याय – 7 : प्रभावपूर्ण माँग का सिद्धांत

आशय, समग्र माँग कीमत व वक्र, समग्र पूर्ति कीमत व,वक्र,प्रभावी माँग निर्धरण, महत्व

VERIFIED

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

खण्ड II

अध्याय – 8 : उपभोग फल

आशय,औसत उपभोग प्रवृत्ति सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति,बचत प्रवृत्ति,नियम का कथनउपभोग फलन का महत्व एवं सिद्धांत

अध्याय – 9 : विनियोग गुणक

गुणक, गुणक के रिसाव, महत्व, प्रकिया, गुणक की, व्युत्पन्ति सरल गुणक निर्धारिक तत्व गुणक या सीमांत, बचत की प्रवृत्ति, प्रतिलोम व्रिफया, निवेश गुणपफ तथ,केन्ज का आय स्व रोजगार सिद्धांत, सार्थकता

अध्याय – 10 :विनियोग का सिद्धांत स्वायत्त तथा प्रेरित विनियोग व पूँजी की सीमान्त कुशलता

विनियोग का आशय, रूप,निर्धरक घटक, सीमान्त क्षमता अनुसूची, निवेश माँग वव्रफ, इच्छित सामूहिक व्यय फलन

अध्याय – 11 : बचत तथा विनियोग : प्रत्याशित व वास्तविक समानता एवं साम्य

बचत क्या होती है ? व्यक्तिगत बचतें तथा सामाजिक बचतें, विनियोग, प्रतिष्ठित विचारधरा, केन्जवादी विचारधारा

अध्याय – 12 : ब्याज की दर : प्रतिष्ठित, नव– प्रतिष्ठित एवं कीन्स का सिद्धांत

ब्याज का आशय,दरों में अन्तर,सिद्वांत

अध्याय – 13 : व्यापार चव्रफ : प्रवृफति एवं सिद्धांत

परिभाषा, प्रकार, अवस्थाएँ, कारण, नियंत्रित करने के उपाय सिद्धांत

खण्ड III

अध्याय – 14 : अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार व अन्तर्क्षेत्रीय, व्यापार, विदेशी व्यापार का महत्व, स्वतंत्राता से पूर्व विदेशी,व्यापार, योजनाकाल में विदेशी व्यापार,प्रमुख निर्यात,निर्यात वृद्धि के लिए सुझाव, निर्यात वृद्धि के लिए, सरकारी प्रत्यन्न, विदेशी व्यापार की संरचना, विदेशी, व्यापार की दशा, विदेशी व्यापार की संवृद्धि एवं संरचना

अध्याय – 15 : अन्तराष्ट्रीय व्यापार के सिद्धांत

सिद्धांत

अध्याय – 16 : व्यापार की शर्तें

अनुकूल या प्रतिकूल, प्रभाव डालने वाले घटक , गणना की कठिनाइयाँ

अध्याय – 17 : तटकर एवं अभ्यंश

तटकर, दर की मान, प्रभाव, दृष्टतम तटकर,आपात अभ्यंशों के प्रकार

अध्याय – 18 : व्यापार सन्तुलन एवं भुगतान संतुलन

भुगतान संतुलन का अर्थ, व्यापार संतुलन,व्यापाद संतुलन एवं व्यापार संतुलन में अन्तर,संरचना एवं स्वरूप, भुगतान शेष में असंतुलन , कुल भुगतान शेष की प्रवृत्तियाँ, चालूखातें पर भुगतान शेष की प्रवृत्तियों ,भुगतान संतुलन,संकट,प्रतिकूल भुगतान शेष प्रतिकूल कापार शेष के कारण,भुगतान शेष के असंतुलन को ठीक करनें के उपाय

VERIFIED

VERIFIED

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

अध्याय – 19 : अवमूल्यन

आशय, प्रभाव, सीमाएँ

अध्याय – 20 : विदेशी व्यापार गुण

आशय, कार्यप्रणाली, मान्यताएँ, रेखीय वर्णन, आलोचनाएँ, महत्व

खण्ड IV

अध्याय – 21 : अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष की स्थापना, उद्देश्य, कार्य,,अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष का संगठन, प्रबन्धन एवं,मताधिकार, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष की सदस्यता, पूँजीतथा अभ्यंश ,अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष का प्रचालन, मूल्यांकन, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष तथा विकाशील देश अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष तथा भारत

अध्याय – 22 : विश्व बैंक

विश्व बैंक क्या है, विश्व बैंक के उद्देश्य, विश्व बैंक का प्रबन्धन संगठन, विश्व बैंक की सदस्यता, विश्व बैंक के कार्य, विश्व बैंक की कार्यप्रणाली, विश्व बैंक की,सफलताएँ या उपलिब्धयाँ ,असफलताएँ विश्व बैंक तथा भारत

अध्याय – 23 : विश्व व्यापार संगठन डब्ल्यू. टी. ओ.

गैट, उद्देश्य, सिद्धात , गैट के विभिन्न दौर, उपलब्धियाँ,असफलताएँ, गैट तथा भारत, विश्व व्यापार,संगठन, गैट व विश्व व्यापार संगठन में अन्तरसंगठन एवं प्रबन्धन, विश्व व्यापार संगठन एवं भारतीय कृषि ,बौद्धिक सम्पदा अधिकार सुरक्षा, विश्व व्यापार संगठन तथा भारत

अध्याय – 24 : भारत में विदेशी व्यापार

विदेशी व्यापार का आशय एवं परिभाषाएँ, विदेशी व्यापार की आवश्यकता एवं महत्व, भारत के विदेशी व्यापार कीद संरचना , भारत के विदेशी व्यापार की मात्रा भारत के विदेशी व्यापार की नवीनतम प्रवृत्तियाँ

अध्याय – 25 : विदेशी व्यापार नीति

निर्यात–आयात नीति 2002–2007, विदेशी–व्यापार नीति 2004–2009, निर्यात–आयात नीति 2009–14, निर्यात–आयात नीति 2009–14 के लिए वर्ष 2013–14 का वार्षिक घोषणा पत्र

अध्याय – 26 : विदेशी व्यापार नीति एवं निर्यात संवर्द्धन

निर्यात–आयात नीति का आशय ,निर्यात–आयात नीति का महत्व, निर्यात–आयात नीति के प्रकार नवीन निर्यात–आयात नीति निर्यात संवर्द्धन

अध्याय – 27 : बहुराष्ट्रीय निगम

आशय, प्रारूप, विकास के कारण, भारत व बहुराष्ट्रीय निगम प्रभाव, संगठनात्मक प्रतिरूप

VERIFIED

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Office
PSSOU, CG Bilaspur

बी. ए. अन्तिम वर्ष
विकास एवं पर्यावरण अर्थशास्त्र

(प्रथम प्रश्नपत्र)

खण्ड - I

अध्याय 1 : आर्थिक वृद्धि एवं विकास : अवधारणा एवं घटक

आर्थिक विकास : आशय एवं परिभाषाएँ, आर्थिक वृद्धि एवं आर्थिक प्रगति में तुलना, विकास तथा वृद्धि में तुलना, आर्थिक विकास की प्रगति एवं विशेषताएँ, आर्थिक संवृद्धि, आर्थिक विकास एवं आर्थिक प्रगति, जीवन का भौतिक गुणवत्ता सूचक (च्फस्)ए मानव विकास का सूचक, विकास का महत्व, अल्पविकसित अर्थव्यवस्था-आशय एवं परिभाषाएँ, विकास के मापदण्ड, क्या भारत एक अल्प विकसित देश है?, बाधाएँ समस्याएँ, आर्थिक विकास की पूर्व वांछनीयताएँ, भारत में आर्थिक विकास की समस्याएँ, आर्थिक विकास के निर्धारक तत्व, आर्थिक विकास के अधिसूचक

अध्याय 2 : निर्धनता

गरीबी एवं गरीबी रेखा अर्थ, निर्धनता के कारण, भारत में निर्धनता की प्रवृत्तियाँ, सरकार द्वारा निर्धनता के दूर करने के उपाय, निर्धनता उन्मूलन कार्यक्रमों का मूल्यांकन, निर्धनता उन्मूलन के लिए सुझाव, तेंदुलकर कमेटी रिपोर्ट, सक्सेना कमेटी रिपोर्ट

अध्याय 3 : जनसंख्या

जनांकिकीय संक्रमण सिद्धान्त, जनांकिकीय संक्रमण की विभिन्न अवस्थायें, जनसंख्या विस्फोट, भारत में जनसंख्या में तीव्र वृद्धि के कारण, भारत में तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या के दुष्प्रभाव, भारत में जनसंख्या विस्फोट का समाधान, परिवार नियोजन (कल्याण) कार्यक्रम, परिवार नियोजन कार्यक्रम की प्रगति, भारत में परिवार नियोजन के मार्ग में कठिनाइयाँ, परिवार नियोजन को सफल बनाने के उपाय, राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000, मानवीय संसाधनों का आर्थिक विकास में महत्व, आर्थिक विकास का जनसंख्या वृद्धि पर प्रभाव जनसंख्या, शहरीकरण और विकास, व्यावसायिक संरचना व आर्थिक विकास, व्यावसायिक संरचना के निर्धारिक घटक, जनसंख्या एवं पर्यावरण

अध्याय 4 : पूँजी विकास के सिद्धान्त तथा पूँजीवाद में संकट

एडम स्मिथ, रिकार्डो, प्रतिष्ठित सिद्धांत

अध्याय 5 : कार्लमार्क्स का आर्थिक विकास मॉडल

इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या, द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, वर्ग संघर्ष, अतिरेक मूल्य का सिद्धान्त, पूंजी संचय, पूंजीवादी संकट, मार्क्स के पूंजीवादी आर्थिक के मॉडल का आलोचनात्मक परीक्षण, विकासशील देशों में मार्क्स मॉडल की उपादेयता

VERIFIED

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-i
BSSOU. CG Bilaspur

खण्ड - II

अध्याय 6 : आर्थिक विकास का महालनोबिस मॉडल

महालनोबिस मॉडल, दो क्षेत्रीय मॉडल, चार क्षेत्रीय मॉडल, महालनोबिस मॉडल की मान्यतायें, महाल नोबिस मॉडल का मूल्यांकन

अध्याय 7 : शुम्पीटर का विकास मॉडल

विश्लेषण

अध्याय 8 : बड़ा धक्का सिद्धान्त

विवेचना, आलोचनात्मक मूल्याँकन

अध्याय 9 : संतुलित वृद्धि का सिद्धान्त

संतुलित वृद्धि क्या है?, व्याख्या, आलोचना

अध्याय 10 : असंतुलित वृद्धि का सिद्धान्त

विवेचना, मूल्याँकन, संतुलित बनाम् असंतुलित वृद्धि

अध्याय 11 : आवश्यक न्यूनतम प्रयत्न सिद्धान्त

सिद्धान्त की व्याख्या, मूल्यांकन

अध्याय 12 : न्यून आय साम्य सिद्धान्तः द्वैतवाद, तकनीकी, व्यावहारिक एवं सामाजिक

विवेचना, मूल्याँकन, प्रोद्योगिकीय द्वैतवाद, वित्तीय द्वैतवाद

अध्याय 13 : विकास का हेरोड-डोमर मॉडल

मॉडल का अर्थ, डोमर का मॉडल, आर्थिक विकास की दर में परिवर्तन, हेरोड-डोमर मॉडल की सीमा एं, हेरोड-डोमर मॉडल और विकासशील देश

अध्याय 14 : सोलो का मॉडल

विवेचना

अध्याय 15 : मीड का मॉडल

विवेचना

VERIFIED

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

अध्याय 16 : जोन राबिन्सन का आर्थिक विकास का मॉडल

मॉडल की मान्यताएँ, मॉडल की व्याख्या, स्वार्णावस्था, संतुलन के निर्धारक, समीक्षात्मक मूल्यांकन, मॉडल की प्रमुख कमजोरियाँ, विकासशील अर्थव्यवस्था में मॉडल की व्यावहारिकता

खण्ड - III

अध्याय 17 : पर्यावरण, पारिस्थितिकी एवं अर्थव्यवस्था

परिस्थिति की एवं आर्थिक विकास, विकास की सत्तृता, सत्त् विकास का आशय, वातावरणीय सुरक्षा व सत्त् विकास, पर्यावरणीय अर्थशास्त्र, पर्यावरण के तत्व व घटक, पर्यावरण के अध्ययन का महत्व, पर्यावरण एवं अर्थव्यवस्था, जनसंख्या एवं पर्यावरण में सम्बन्ध, बाजार तंत्र एवं पर्यावरण, प्राकृतिक सं साधन और आर्थिक विकास, आर्थिक विकास का पर्यावरण पर प्रभाव

अध्याय 18 : पर्यावरणीय विधान एवं पोषणीय विकास

पर्यावरणीय सुरक्षा एवं सुधार, पोषणीय विकास, धारीणीय लेखाँकन

अध्याय 19 : पर्यावरणीय लेखांकन

पर्यावरणीय सुरक्षा एवं सुधार,पोषणीय विकास, धारीणीय लेखाँकन

अध्याय 20 : बौद्धिक पूँजी की अवधारणा

मानव पूँजी निर्माण की सीमाएँ, शिक्षा, उपाय, कसौटियाँ, भोजन, पोषण, स्वास्थ्य

खण्ड - IV

अध्याय 21 : कृषि : उत्पादकता एवं वैश्वीकरण

कृषि की भूमिका, कृषि का विकास, कृषि विकास का मूल्यांकन, कृषि विकास की समस्याएँ, भारती य कृषि की उत्पादिता, नयी कृषि व्यूह-रचना एवं हरित क्रांति, नयी आर्थिक नीति एवं कृषि

अध्याय 22 : प्रौद्योगिकी एवं रोजगार

आर्थिक विकास में प्रौद्योगिकी, श्रम प्रधान बनाम पूँजी प्रधान तकनीक, पूँजी प्रधान तकनीक

अध्याय 23 : मौद्रिक नीति तथा विकास

आशय, उद्देश्य, आर्थिक विकास, अल्पविकसित अर्थव्यवस्था व मौद्रिक नीति

अध्याय 24 : राजकोषीय नीति एवं विकास

आशय, महत्व, उद्देश्य, सीमाएँ, रोजगार

VERIFIED

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
SSOU, CG Bilaspur

परिमाणात्मक विधियाँ

(द्वितीय प्रश्नपत्र)

खण्ड – I

अध्याय– 1 सांख्यिकी का परिचय एवं सांख्यिकी सर्वेक्षण

अध्याय– 2 समंकों के प्रकार

अध्याय– 3 निदर्शन

खण्ड – II

अध्याय– 4 आवृत्ति बंटन

अध्याय– 5 चित्रामय एवं बिन्दुरेखीय प्रस्तुतीकरण

अध्याय– 6 केन्द्रीय प्रवृत्ति की मापें

खण्ड – III

अध्याय– 7 प्रतीपगमन

अध्याय– 8 विषमता

अध्याय– 9 प्रथुशीर्षत्व

खण्ड – IV

अध्याय– 10 सहसम्बन्ध

अध्याय– 11 सूचकांक

अध्याय– 12 काल श्रेणी का विश्लेषण

VERIFIED

REGISTRAR
Pt. Sunderlal Sharma (Open)
University Chhattisgarh
BILASPUR (C.G.)

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur